# शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक

प्रो. बी. एल. जैन

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-81-920597-1-6

कृति : शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक : प्रो. बी. एल. जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं 341306 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल : डॉ. मनीष भटनागर
डॉ भावग्राहीप्रधान
डॉ. विष्णु कुमार
डॉ. अमिता जैन
डॉ. सरोज राय
डॉ. गिरिराज भोजक
डॉ. आभा सिंह
डॉ गिरधारी लाल शर्मा

संस्करण : मई, 2018 (प्रथम)

मूल्य : 200/-

प्रकाशन : महावीर पथ पब्लिकेशन
(प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
www.pvjss.com, email: pvjss108@gmail.com

कम्प्यूटराईज्ड : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

मुद्रक : जैन कम्प्यूटर, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

# अनुक्रमणिका


1. शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- प्रो. बी. एल. जैन 01-05

2. अध्यापक शिक्षा की समस्याएं

- डॉ. मनीष भटनागर 06-11

3. **Action Research : A Remedial Device in Teaching English in India**

- Dr. Bhabagrahi Pradhan 12-16

4. अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक स्तर सम्बन्धी समस्या एवं समाधान

- डॉ. विष्णु कुमार 17-23

5. राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी तथा उसकी ई-सुविधाएं

- डॉ. अमिता जैन 24-27

6. वर्तमान शिक्षा के मूल्यों के बदलते प्रतिमान एक चुनौती समाधान

- डॉ. सरोज राय 28-31

7. अध्यापक शिक्षा : पाठ्यचर्या विकास के नूतन आयाम

- डॉ. गिरिराज भोजक 32-36

8. शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

- डॉ. आभा सिंह 37-40

9. अध्यापक शिक्षा में अध्यापन अभ्यास कार्य: समीक्षात्मक अध्ययन

- डॉ गिरधारी लाल शर्मा 41-43

10. सागर ब्लॉक के गंभीरिया गांव के बीड़ी बनाने वाले पालकों का अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन

- डॉ. अदिति गौतम 44-49

11. शिक्षा का अधिकार

- सोनम गंगवाल 50-53




Scanned with CamScanner

# शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

डॉ. आभा सिंह

आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सम्मुख एक बड़ा प्रश्न मुँह खोले खड़ा है कि "क्या यह शिक्षा बालकों का सर्वांगीण विकास करती है?" क्या जो शिक्षा का स्वरूप हमारे सामने है वह सर्वेभवन्तुसुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः सर्वेभद्राणि प्रयन्तु मा मष्विद् दुःख भाग्भवेत् एवं सत्यम् शिवम, सुन्दरम् की भावना का विकास करने में सक्षम है? जिस राष्ट्र की पहचान ही वहां के ज्ञान, आदर्षएवं मूल्यों से हुआ करती थी, आज जो शिक्षा हमारे राष्ट्र के भविश्य, राष्ट्र निर्माताओं, हमारे बालकों को दी जा रही है वह हमारी संस्कृति की सम्पोशक है।

इसका जवाब देना आसान नहीं है क्योंकि आज की शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने के उद्देष्य तक सीमित होती जा रही है।

आज की शिक्षा मनुष्य को मनुष्य होने से वंचित कर रही है। वह व्यक्ति को सभी वह चीजें सीखा रही हैं जो उसे मनुष्य से मशीन बना रही हैं। अथवा उसमें मनुष्यता के गुण को समाप्त करती जा रही है। वह उनमें ऐसे गुणों का विकास कर रही है जो स्वयं उसके लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं जैसे–प्रतियोगिता, तुलना, महत्त्वाकांक्षा, अहंकार, परिग्रह, स्वार्थपरता।

तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा के कारण एक ऐसा वर्ग विकसित होता जा रहा है जो नई सोच और नई जीवन–शैली विकसित कर रहा है। वह जीवन–शैली जो व्यक्ति को देश की संस्कृति, आस्था, अध्यात्म, भाशा, परम्परा, मान्यताओं से दूर कर रहा है। आज यह वर्ग असंतोश, अविष्वास, भौतिकतावादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण परिवेष का निर्माण कर रहा है। मानवीय मूल्य व मानवीय संस्कृति की संवेदना शून्य सी हो गयी है। आधुनिकता एवं तकनीकी के दौर में मनुष्य आध्यात्मिक जीवन मूल्यों के ह्रास, बौद्धिक दासता व कुंठित सांस्कृतिक पतन की ओर चल पड़ा है। इसका दोशी कौन है?

इसका सरल सा जवाब है आज की शिक्षा। वर्तमान शिक्षा व्यक्ति में संस्कारों, आदर्षों तथा मूल्यों के स्थान पर केवल निरी व्यावसायिकता का आवरण चढ़ाए भौतिकवादी दषश्टिकोण एवं भौतिकताप्रिय मानव देह का निर्माण कर रही



Scanned with CamScanner